मुंडा लोकसंस्कृति के पुनरुत्थान में बिरसा मुंडा की चेतना का योगदान

निकिता केरकेट्टा[1], डॉ. आँचल श्रीवास्तव[2]
[1]शोधार्थी हिंदी, [2]शोध निर्देशक (सह.प्राध्यापक)
डॉ. सी. व्ही. रमन वि. वि. करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश:

मुण्डा लोकसंस्कृति में बिरसा मुंडा के संघर्ष और उनकी प्रतिरोध की चेतना को मुंडा लोकसंस्कृति के संदर्भ में विश्लेषित करता है। बिरसा मुंडा, जिन्हें 'धरती आबा' के नाम से जाना जाता है, आदिवासी समाज के एक महान नेता थे, जिन्होंने अंग्रेजों और जमींदारी व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष किया। मुंडा लोकसंस्कृति में लोकगीत, कहानियाँ, और धार्मिक विश्वास शामिल हैं। बिरसा मुंडा की प्रतिषोध चेतना को जीवित रखा और आदिवासी समाज में उसकी निरंतर उपस्थिति सुनिश्चित की। लोकगीतों और कथाओं में बिरसा को एक धार्मिक और सामाजिक नायक के रूप में चित्रित किया गया है, जिनकी शिक्षाएँ आज भी आदिवासी समुदाय के जीवन का हिस्सा हैं। उनका संदेश था कि आदिवासी समाज अपनी परंपराओं की रक्षा करे, बाहरी दबावों से मुक्त हो, और अपने आत्मसम्मान के लिए खड़ा हो। बिरसा के द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रतिरोध केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मुक्ति की दिशा में एक आंदोलन था। बिरसा मुंडा की प्रतिरोध चेतना आज भी मुंडा लोकसंस्कृति में एक जीवित धारा के रूप में मौजूद है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आदिवासी समाज को प्रेरित करती है। उनके जीवन और संघर्ष की गाथाएँ लोक साहित्य के माध्यम से आज भी सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव की प्रेरणा देती हैं। यह शोधपत्र मुंडा लोकसंस्कृति के प्रमुख अयामों जैसे- लोकविश्वास, लोककला, लोकगीत, लोककथाएँ, धार्मिक परंपराएँ और सामुदायिक मूल्य में बिरसा मुंड ा की चेतना के प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिरस मुंडा की विचारधारा ने मुंडा समाज में अस्मिता, आत्मगौरव और सांस्कृतिक एकता की नई लहर उत्पन्न की, जिसने आगे चलकर "उलगुलान" जैसे- ऐतिहासिक जन आंदोलनों को जन्म दिया। यह शोध मुंडा लोकसंस्कृति के पुनरुत्थान को सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में व्याख्यायित करता है, जहाँ बिरसा मुंडा की चेतना एक जीवंत प्रेरक शक्ति के रूप में आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

मुख्य शब्द: सामाजिक, सांस्कृतिक, परंपरा, समाज, प्रतिरोध, संघर्ष आदि।

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में आदिवासी समाज को अक्सर मुख्यधारा से अलग करके देखा गया है, लेकिन यह समाज न केवल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध रहा है, बल्कि सामाजिक न्याय, भूमि अधिकार और आत्मसम्मान के लिए संघर्षों का सशक्त प्रतीक भी है। ऐसे संघर्षों में बिरसा मुंडा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिरसा मुंडा, जिन्हें 'धरती आबा' के नाम से जाना जाता है, न केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ आवाज उठाई, बल्कि आदिवासी समाज के आत्मसम्मान, संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए एकजुट किया। मुंडा लोकसंस्कृति में बिरसा मुंडा की छवि केवल एक योद्धा या धार्मिक नेता की नहीं, बल्कि एक प्रतिरोध की चेतना के रूप में स्थापित है।

लोकगीतों और लोक कथाओं ने बिरसा मुंडा और उनके आंदोलन को केवल ऐतिहासिक तथ्य नहीं, बल्कि एक जीवित प्रेरणा के रूप में संरक्षित किया है। यह लोक साहित्य ही है, जिसने बिरसा के प्रतिरोध को जनमानस में अमर बना दिया। भारतीय सांस्कृतिक के व्यापक परिदृश्य में लोकसंस्कृति का स्थान मूलभूत और अपरिहार्य है। लोकसंस्कृति केवल लोकजीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज की आत्मा, उसकी परंपरा, आस्था और सामूहिक चेतना का दर्पण होती है। इन्हीं लोकधाराओं में मुंडा लोकसंस्कृति एक ऐसी सशक्त परंपरा है जिसने झारखंड और आस-पास के क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। औपनिवेशिक काल के दौरान जब भूमि-राजस्व नीति, धर्मांतरण और पूंजीवादी शोषण की प्रक्रियाओं ने मुंडा समाज की सांस्कृतिक जड़ों को कमजोर किया, तब मुंडा समाज अपने अस्तित्व के संकट से जूझने लगा। इस सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक असंतुलन के समय में बिरसा मुंडा का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने न केवल राजनीतिक प्रतिरोध का नेतृत्व किया, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण की चेतना को भी जागृत किया।

बिरसा मुंडा की चेतना को केवल एक जनविद्रोह के रूप में नहीं देखा जा सकता वह मुंडा समाज की आत्मा में व्याप्त लोकचेतना का पुनरुत्थान थी। उन्होंने अपने आंदोलन के माध्यम से मुंडा समाज को उसकी पारंपरिक जड़ों, विश्वासों और सांस्कृतिक अस्मिता से पुनः जोड़ा। उनका दृष्टिकोण लोक से नेतृत्व तक फैला हुआ था। जहाँ लोकगीत, लोककथाएँ, त्योहार, सामुदायिक जीवन और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व को उन्होंने सामाजिक संगठन की शक्ति में परिवर्तित किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बिरसा मुंडा की चेतना के सांस्कृतिक और वैचारिक योगदान दान को लोकसंस्कृति के पुनरुत्थान की प्रक्रिया में विश्लेषित करना है। यह समीक्षा मुंडा लोकसंस्कृति के प्रमुख तत्वों जैसे परंपरा, लोककला, धर्म, सामाजिक संबंध और सामूहिकता पर बिरसा मुंडा के प्रभाव का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है। आधुनिक युग में जब वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण ने आदिवासी समाजों की सांस्कृतिक संरचनाओं को पुनः संकटग्रस्त किया है, तब बिरसा मुंडा की चेतना आज

भी प्रासंगिक प्रतीत होती है। उनकी विचारधारा यह संदेश देती है कि सां स्कृतिक स्व ाभिमान ही सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार है।

अतः यह लेख मुंडा लोकस ंस्कृति के पुनरुत्थान की प्रक्रिया में बिरसा मुंडा की चेतना के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करने का प्रयास है, जिससे आदिवासी विमर्श और भारतीय लोकसंस्कृति अ ध्ययन की दिशा में नई दृष्टि प्राप्त हो सके। बिरसा मुंडा की जीवनगाथा मुंडा लोक परंपरा का एक अहम हिस्सा बन चुकी है। आदिवासी सामाजिक बिरसा मुंडा का नाम सम्मान और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उनकी जयंती 15 नवंबर को 'जनजाति गौरव दिवस' के रूप में मनाया जाता है और इस दिन आदिवासी समाज अपनी परंपराओं, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति अपने सम्मान को व्यक्त करता है।

बिरसा मुंडा का प्रारंभिक वर्ष (सन् 1857 से 1894 ई.)

मुंडा जाति के सुगना मुंडा का पुत्र, बिरसा का जन्म 15 नवंबर 1875 ई. को राँची से लगभग 40 कि.मी. दूर खूंटी के उलिहातू नामक स्थान में हुआ था। परंतु उसका बचपन ननिहाल चलकद में बीता था। बचपन में बिरसा धूल में खेल-कूद कर एक मजबूत और खूबसूरत बालक बना। वह जंगल में भेंड़, बकरियां चराया करता था। वह कद्दू से बना तार लगा वाद्य यंत्र "तुइला" तथा एक वंशी रखता था। जब वह बंशी बजाता था तो सभी प्रकार के जीव उसके मनमोहक सुर के आकर्षण से मोहित होकर उसकी ओर खींचे चले आते थे।

बिरसा ने बिरजू नामक गांव के मिशन स्कूल से लोअर प्राईमरी पास किया। उच्च शिक्षा बिरसा ने चाईबासा के मिशन स्कूल से प्राप्त की जहां ईसाई मत तथा ईसा मसीह के जीवन की पूर्ण जानकारी उन्हें प्राप्त हुई। उस समय राँची और उसके आसपास के इलाकों में अत्याचार से ऊब कर सरदारों ने जमीदारों और सरकार के विरोध में आंदोलन शुरू कर दिया तथा ईसाईं स्कूलों से अपने बच्चों को हटाने लगे। इस आंदोलन से प्रभावित हो बिरसा ने जर्मन मिशन स्कूल छोड़ दिया और उनके पिताजी ने भी ईसाई धर्म का परित्याग कर पुनः प्राचीन धर्म स्वीकार कर लिया।

मुंडा लोकसंस्कृति की विशेषताएँ

मुंडा लोकसंस्कृति एक समृद्ध और जीवंत सांस्कृतिक परंपरा है, जो प्रकृति-पूजा, सामुदायिक जीवन, लोकगीतों, नृत्य और मौखिक साहित्य पर आधारित है। यह संस्कृति न केवल आदिवासी समाज की जीवनशैली को दर्शाती है, बल्कि उसमें उनके संघर्ष, आस्था और सामाजिक संरचना का भी गहरा प्रतिबिंब मिलता है। मुंडा समाज प्रकृति को देवता मानता है। धरती, जल, जंगल और आकाश उसके धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक हैं। उनके प्रमुख पर्व जैसे सरहुल, करम और जिउतिया प्रकृति और फसल चक्र से जुड़े होते हैं, जिनमें सामूहिक नृत्य और गीतों का विशेष महत्व है।

मुंडा समाज की संस्कृति मुख्यतः मौखिक परंपराओं पर आधारित है। यह संस्कृति गीत, नृत्य, प्रतीकों और प्रकृति-आधारित विश्वासों से जुड़ी होती है। लोकगीतों में केवल मनोरंजन नहीं होता, बल्कि वह समाज की स्मृति, संघर्ष और चेतना के दस्तावेज होते हैं। बिरसा मुंडा जैसे व्यक्तित्व इसी लोकसंस्कृति का अंग बनकर समाज के लिए मार्गदर्शक बने। लोकगीतों और कथाओं में उनका चित्रण एक देवता, योद्धा और सुधारक के रूप में हुआ है। मुंडा लोकसंस्कृति की मूल विशेषता उसकी प्रकृति-केंद्रित जीवन दृष्टि है।

1. सामूहिक नृत्य, गीत, पर्व, त्योहार और कृषि-केंद्रित अनुष्ठान इसकी आत्मा हैं।
2. लोकगीतों में धरती, जल, वन, पर्वत और आत्मा-देवता की अराधना प्रमुख है।
3 .समाज में समानता, सहयोग और सामुदायिक न्याय की परंपरा गहराई से रची-बसी है।

औपनिवेशिक काल में जब इन परंपराओं को “पिछड़ा” या “अंधविश्वास” कहकर दबाया गया, तब बिरसा मुंडा ने इन्हें पुनः आत्मगौरव के प्रतीक के रूप में स्थापित किया।

बिरसा मुंडा की प्रतिरोध चेतनाः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बिरसा के जीवन के दो प्रमुख उद्देश्य थे-

(क) समाज की बुराइयों और कमजोररियों को दूर करना।

(ख) अंग्रेजों से लड़कर अपनी भूमि को वापस लेना।

धीरे-धीरे अपने समाज में सरदार के रूप में उभर कर आने लगा। बहुत सी ऐसी घटनाओं के कारण बिरसा 1895 तक पैगंबर के रूप जाने लगा। उसने बंगा पूजा प्रथा का विरोध किया और अन्य धार्मिक अंधविश्वासों का भी परिष्कार किया।

बिरसा पर सबसे अधिक प्रभाव आनंद पांडे नाम के एक व्यक्ति का हुआ। 3 साल तक उसके साथ रहने के कारण उस समय हुआ जब वह सन् 1891 में बंदगांव गया। उस समय आनंद पांडे वैष्णव धर्म के प्रचारक के रूप में काम कर रहे थे। बिरसा भी उसके विचारों से प्रभावित होकर एक प्रचारक के रूप में उसके साथ घूमते और उसके साथ गौरबेरा और पाटपूर गये। कहा जाता है कि पाटपुर में ही बिरसा को विष्णु भगवान के दर्शन हुए थे। बिरसा ने हिंदू धर्म ग्रंथो को पढ़ा और यही से जानकारी प्राप्त की और वह जनेऊ धारण किया। उसने अहिंसा और धार्मिकता पर अधिक बल दिया। किन्तु कुछ दिनों के बाद आनंद पांडे से बिरसा की अनबन होने के कारण दोनों अलग हो गये। अब बिरसा का भी व्यक्तित्व निखरने लगा था। उसकी लोकप्रियता अधिक बढ़ गई थी और लोग उनको अधिक मान-सम्मान देने लगे। अब बिरसा का व्यक्तित्व और उसकी लोकप्रियता अधिक बढ़ गई, लोग उसको अधिक सम्मान देने लगे और उसकी बातें सुनने लगे।

लोकगीतों और कथाओं में प्रतिरोध

मुंडा समुदाय के लोकगीतों में बिरसा की वीरता, उनकी भविष्यवाणियों, उनके नेतृत्व और बलिदान की गाथाएँ गाई जाती हैं। इन गीतों में बिरसा को एक मसीहा, एक धर्मगुरु और एक रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उदा.-

“धरती आबा बोले- उठो रे मुंडा हो,
जंगल जलाए गए, पानी छीन लिया है।
हमारा राज लाओ, तोड़ो बेड़ी,
धरती माँ पुकारे, बिरसा आयो…”

इस प्रकार के गीत में न केवल भावना हैं, बल्कि आदिवासी चेतना को जागृत करने वाले क्रांतिकारी स्वर भी मिलते हैं। मुंडा समाज के लोकगीतों में बिरसा मुंडा की वीरता, नेतृत्व और बलिदान का चित्रण देखने को मिलता है। उदा.-

“धरती आबा आया,
जंगल बोला, नदी गाई,
हमारा राज फिर लौटी,
बिरसा लड़ा, हम जीते…”

इस प्रकार के गीत केवल श्रद्धा नहीं व्यक्त करते, बल्कि संघर्ष की चेतना को जीवित रखते हैं। लोककथाओं में बिरसा की चमत्कारी शक्तियों का वर्णन भी आता है, जो यह दिखाता है कि समाज उन्हें केवल नेता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक मानता था बिरसा मुंडा ने लोकसंस्कृति के पुनरुत्थान के लिए तीन प्रमुख दिशाएँ दीं-

(क) लोकपरं परा की पुनस्थापनाः बिरसा ने मुंड धर्म और परंपराओं को सामाजिक आचरण का आधार बनाया।

(ख) लोककला और लोकगीतों का संरक्षण उनके अनुयायियों ने पारंपरिक नृत्य, गीत और त्याहारों को “आदिवासी गौरव” के रूप में पुनर्जीवित किया।

(ग) सामाजिक सुधार और एकताः उन्होंने अंधविश्वास, नशाखोरी और सामाजिक बिखराव को समाप्त करने का संदेश दिया।

इस प्रकार बिरसा मुंडा की चेतना ने मुंडा समाज में सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की भावना विकसित की।

प्रतीकात्मकता और प्रतिरोध की गूंज

बिरसा मुंडा की छवि एक प्रतिरोध-प्रतीक के रूप में विकसित होती है। उनके द्वारा अपनाई गई धार्मिक पद्धति जो हिन्दू धर्म, ईसाई धर्म और आदिवासी परंपराओं से अलग थी। सांस्कृतिक स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया। बिरसा का उपदेश था कि-

- शराब का सेवन बंद करना।
- अपने रीति-रिवाजों की रक्षा करना।
- बाहरी धर्मों को न मानना।
- जमींदारों और अंग्रेजों सत्ता का विरोध करना।

इन विचारों से मुंडा लोकसंस्कृति में विरोध करने का तरिका बदल गया।

बिरसा ने कहा था- "हमारी धरती, हमारा राज।" यह नारा सिर्फ राजनीतिक क्रांति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्वाधीनता के भी प्रतीक रूप में सामने आया।

लोकसंस्कृति में वर्तमान उपस्थिति

आज भी झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के मुंडा बहुल क्षेत्रों में बिरसा मुंडा की स्मृति में लोक उत्सवों, गीतों और नृत्यों का प्रदर्षन किया जाता है। "बिरसा मेला" जैसे पर्वों का आयोजन कर उनके संघर्ष का याद किया जाता है। यह प्रमाण है कि लोकसंस्कृति केवल अतीत को सहेजने का माध्यम नहीं, बल्कि वर्तमान की चेतना को जागृत करने की शक्ति भी उसमें होती है। यहां के राग लयों की विशिष्टता आश्चर्यजनक है। मुंडा की भाषा मुंडारी में सुकुमारता और लयात्मकता तथा नागपुरी नृत्यों में दोनों का मिश्रण और समन्वय है।

इस तरह यहां की बोली भी अलग पहचान है, मुंडारी प्रोटोऑस्ट्रेलायड कुल की भाषा है, किंतु इनकी अपनी स्वतंत्रता और मौलिकता है। अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है सभी भाषाओं के अपने साहित्य हैं ये सभी उस अवस्था में हैं जिन्हें संरक्षण संवर्धन की आवश्यकता है। आदिवासी भाषाओं के शिष्ट साहित्य की रचना अब शुरू हो चुकी है। आज के समय में भी बिरसा मुंडा की चेतना आदिवासी समाज के लिए मार्गदर्शक है। अधुनिकता और वैश्वीकरण के दौर में जब पारंपरिक लोकसंस्कृतियाँ संकट में है, तब बिरस मुंडा का संदेश "संस्कृति से आत्मबल प्राप्त करो" अत्यंत प्रासंगिक बन जाता है। उनकी चेतना न केवल मुंडा समाज बल्कि पूरे भारतीय लोकजीवन में स्थानीयता, सामूहिकता और स्वाभिमान के आदर्श को पुष्ट करती है।

निष्कर्ष

बिरसा मुंडा केवल इतिहास की एक शख्सियत नहीं हैं, बल्कि वे मुंडा लोकसंस्कृति में आज भी प्रतिकार और आत्मसम्मान की जीवंत चेतना के रूप में विद्यमान हैं। उनके विचार, जीवन और संघर्ष लोक साहित्य में इस

प्रकार रचे-बसे हैं कि वे सामाजिक स्मृति का स्थायी हिस्सा बन चुके हैं। यह तथ्य इस बात को पुष्ट करता है कि आदिवासी लोकसंस्कृति ने बिरसा मुंडा को एक मिथकीय और प्रेरणात्मक रूप में न केवल संरक्षित किया, बल्कि प्रतिरोध की चेतना को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित भी किया। बिरसा मुंडा का योगदान केव ल एक जननायक के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरणकर्ता के रूप में भी समझा जानना चाहिए। उनकी चेतना ने मुंडा लोकसंस्कृति को पुनर्जीवित किया, समाज को एक नई दिशा दी, और आदिवासी अस्मिता के लिए स्थायी आधार तैयार किया। उनके विचार आज भी यह प्रेरणा देते हैं कि सांस्कृतिक आत्म बोध ही सामाजिक स्वाधीनता का प्रथम कदम है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. डॉ. रमन सिन्हा, बिरसा धर्म, झारखंड ज्योति, 15 नवंबर 93 से 15 फरवरी 94, पृष्ठ 7
2. डॉ. विजय शंकर उपाध्याय व शर्मा, डॉ. विजय प्रकाश भारत की जनजाति संस्कृति, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2009, पृ. 109
3. डॉ. जियाउद्दीन अहमद, बिहार के आदिवासी, मोतीलाल बनारसीदास, 1978, पृ. 164
4. सुरेश कुमार सिंह, बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन, वाणी प्रकाशन, 2017
5. डॉ. विसेश्वर केसरी प्रसाद, छोटा नागपुर का इतिहास, झारखण्ड झरोखा, 2022
6. सोमर महतो, बिरसा मुंडा और आदिवासी चेतना. रांचीः आदिवासी प्रकाशन, 2015
7. जोसेफ तिग्गा, मुंडा समाज की संस्कृति और धर्म, नई दिल्लीः जनजातीय अध्ययन केंद्र, 2017
8. सत्यनारायण ओझा, भारतीय आदिवासी आंदोलन का इतिहास पटनाः लोक संस्कृति प्रकाशन, 2019.
9. डॉ. कुमार सुरेश सिंह, बिरसा मुंडा शहादत दिवस पर विशेषः आदिवासी चेतना का अमिट प्रतीक उलगुलान और भगवान बिरसा मुंडा. (2025,जून).
10. “स्वाधीनता संघर्ष और जनजातीय चेतना के प्रतीक भगवान बिरसा मुंडाः मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव”. (2024,नवंबर). WebDunia (हिन्दी).